ई – काव्य संग्रह

“दस्तक - समय की”

रचियता,

भगवती प्रसाद व्यास “नीरद”

(बृज व्यास)

जीवन परिचय

1. रचनाकार का पूरा नाम	भगवती प्रसाद व्यास "नीरद"
2.पिता का नाम	स्व. श्री शंकर लाल जी व्यास
3.पत्नी का नाम	कुमुद व्यास
4.जन्म / जन्म स्थान	08/05/1954 तराना , जिला : उज्जैन , मध्य प्रदेश
5.वर्तमान स्थायी पता	16/29, राठी मोटर्स के सामने ,खाद गोदाम के पीछे ,ए .बी .रोड , शाजापुर , मध्य प्रदेश 465001
6.फोन नंबर / वाट्स अप नंबर / ई मेल	Mobile no. 9599244737 WhatsApp no. 9425428598 mail id : bpvyasbrij@gmail.com
7.व्यवसाय	स्वतंत्र लेखन ! अर्धशासकीय संस्थान से सहा. लेखाधिकारी पद से सेवानिवृति !
8.प्रकाशन विवरण (प्रकाशित रचनाओं का)	सरिता , मुक्ता , कादम्बिनी में वर्ष 1978 से 1988 तक , तथा 2016 में "भारत के प्रतिभाशाली हिंदी रचनाकार काव्य संग्रह" तथा "प्रेम काव्य सागर" एवं "काव्य अमृत" साझा काव्य संग्रह में भी रचनाओं का प्रकाशन ! "एक लम्हा ज़िंदगी" और "रूह की आवाज "तथा "खनक आखर की" साझा काव्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य !
9.सम्मान का विवरण (यदि कोई हो तो दें)	प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान , प्रेम काव्य सागर सम्मान तथा काव्य अमृत सम्मान 2016 में !
10.काव्य मंच /आकाशवाणी /दूरदर्शन /मंच पर यदि काव्य पाठ किया हो	1972 से 1976 तक आकाशवाणी इंदौर के युव वाणी कार्यक्रम में कविताओं एवं कहानियों का प्रसारण! इसी दौरान स्थानीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ 1974 से 1978 तक !

घोषणा:

मैं ये घोषणा करता हूँ कि आपके प्रकाशन से प्रकाशित होने वाले साझा काव्य संग्रह "कश्ती में चाँद " में प्रकाशन हेतु भेजी जा रही ये समस्त रचनाएँ मेरे द्वारा लिखित हैं तथा जीवन परिचय में दी गयी समस्त जानकारी सत्य है , असत्य पाए जाने की दशा में हम स्वयं जिम्मेदार होंगें!

रचनाकार का नाम: भगवती प्रसाद व्यास "नीरद"

दिनांक : 18/01/2017

वर्तमान पत्राचार का पता:

बी.पी.व्यास द्वारा सचिन व्यास ,
फ्लेट नंबर A-6 , खसरा नंबर 129 ,
फ्रायडे मार्किट लेन , कारपोरशन बैंक के सामने वाले गली ,
इगनू रोड , नेब सराय ,न्यू देल्ही – 110068

" सत्ता में साझेदारी है झुकना होगा "

एन.आई.टी.का शोर –शराबा
सोया देश फिर से जागा /
वहां पुलिस ने लाठी भांजी
नेताओं का दौडम– भागा /
सहमे छात्र अधूरी मांगें -
घुटने ही को झुकना होगा //

उग्र प्रदर्शन सच झुन्ठलाया
और पीडिता को धमकाया /
न्यायालय में सच जाहिर था
झूंठ का परचम काम न आया /
अलगाववाद को छुपा समर्थन -
सरकारों से कुछ न होगा //

हन्द्वाड़े की साजिश कोरी
जान गए कश्मीर की थ्योरी /
सेना को बदनाम करो और
सत्ता की सरकाओ डोरी /
मेडम पहुँच गयी जब दिल्ली -
जो माँगा है मिलना होगा //

शहर से बंकर हट जायेंगे
आखिर हम मुंह की खायेंगे /
जिन्हें समर्थन सत्ता का है
क्या उनसे हम लड़ पायेंगें /
समझोतों का मर्म न जाना -
शर्म के आगे टिकना होगा //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" नीयत अब भी साफ नहीं है "

सर -आँखों पर जिन्हें बिठाते
देश की ज़न्नत कह गुण गाते /
खुले हाथ सहयोग दिया है -
अपनी पीड़ा को बिसुरा के /
करवट लेते नींद खुले है
पर इनको अंदाज नहीं है //

सेना अपनी जान पे खेले
विपदा सारी इनकी झेले /
झूंठी तोहमत मर्यादाएं -
अग्नि-परीक्षा में नित ठेले /
सच से अब तक मुंह मोड़ा है
इनके मन में राज कई हैं //

राजनीति के दांव नए हैं
देशवासी भी ठगे गए हैं /
तीन सो सत्तर किसे याद है -
वादों में ही छले गए हैं /
शिक्षा-परिसर बने अखाड़े
कौन यहाँ गुमराह नहीं है //

परदेसों से रिश्ते-नाते
जब -तब देखो हमें गिनाते /
अमरीका की दोहरी नीति -
यू.एन.में मात हम खाते /
चीन -पाक सदा धोखा दें
नेताओं को याद नहीं है //

नई -नई घुसपैठ हो रही
वार्ताएं सब फेल हो रही /
पठानकोट ठन्डे बस्ते में -
जनता-सेना वक़्त ढो रही /
सपनों के सौदागर सारे
यों कल की परवाह नहीं है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

3
" आज कन्हैया छूट गया है "

कहीं जश्न है खुशियाँ थोड़ी
बड़े जतन से राह है मोड़ी /
राहत जहाँ रोग से पाई
बड़ी कठिन है अभी लड़ाई /
न्यायालय की नजर टिकी है -
देश कहाँ अब टूट रहा है //

न्यायालय के प्रश्न बड़े हैं
देश के सम्मुख आज खड़े हैं /
प्राध्यापक-छात्र सब भूले
कैसे हिली देश की चूलें /
विधि सबको कर्तव्य दिखाए -
जनता ने भी खूब सहा है //

शिक्षा-परिसर में नारे हैं
देश-विरुद्ध जयकारे हैं /
स्वीकारोक्ति कहीं नहीं है
विचारों पर धूल जमी है /
न्यायालय अब सचेत कर रहा -
जनमानस भी रूठ गया है //

साम्यवाद शिक्षा के संग है
दिखा देश को नया रंग है /
अभिव्यक्ति के रंग नये हैं
वैचारिक यहाँ द्वन्द नये हैं /

गलत दशा है गलत दिशा है -
आज राही फिर भटक गया है //

संसद में भी बहस हुई है
किसे गलत भी दिखे सही है /
यहाँ नाम पर हल्ला-गुल्ला ;
देशभक्ति को देते टल्ला /
पोषण भी परितोषण भी है -
सम्मोहन अब टूट गया है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

4
" प्रश्न अनुत्तरित कई खड़े हैं "

संसद अब बीमार लगे है
सत्ता सच लाचार लगे है /
मांगे से सहयोग ना मिलता
यक्ष-प्रश्न विपक्ष है करता /
उजले-उजले दिखते हैं पर -
सबके दामन दाग चढ़े हैं //

संसद का घेराव हुआ है
छात्रों का जमाव हुआ है /
दलित इनमें गिने-चुने हैं
हमने ही सब प्रश्न बुने हैं /
नेता अपना लक्ष्य साधते -
दूजे काँधें सीढ़ी चढ़े हैं //

काले धन पर छापे पढ़ते
संसद में नेता सब लड़ते /
पंगु व्यवस्था डरी हुई है
सच पहले खूब ऐश हुई है /
कई पीढ़ियाँ यहाँ तर गई -
हम टांगे झोली आज खड़े हैं //

इशरत-जहाँ पे हुए खुलासे
रोज मीडिया भरे कुलांचे /

पहले सच पर पर्दा डाले
फिर उसको ही यहाँ खगाले /
सत्ता का है साथ निभाते -
दाम चुकाना हमें पड़े हैं //

कौन है सच्चा कौन है झूंठा /
सचमुच है ना कोई रूठा /
जनता देखे साँस थामकर
नेता लड़ते यहाँ नामवर /
अब राजनीति में दांव-पेंच हैं -
नेता सब पहलवान बड़े हैं //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

5

" नेता अब बेशर्म हो गए "

हठधर्मी पाले बैठे हैं
खुद में ही ऐंठे-ऐंठे हैं /
देशधर्म ना राजधर्म है
चुनाव जीतना मुख्य कर्म है /
संसद में केवल बहसें हैं -
अवसर चूके नर्म हो गए //

रंग-बिरंगे यहाँ चरित है
चिल्लाते बस दलित-दलित है /
अल्पसंख्यक बनते मोहरा
इनका चरित्र सदा है दोहरा /
तुष्टिकरण है बना छलावा -

छलिया जैसे कर्म हो गए //

याददाश्त कमजोर है इनकी
कहा भूल जाते हैं तबही /
इन्हें मीडिया झलक दिखाए
कहते अर्थ गलत लगाए /
भाषा पर कंट्रोल नहीं है -
रंग-बिरंगे मर्म हो गए //

कहीं समर्थन कहीं विरोध है
इनको ना अपराध-बोध है /
रोज लड़ाते यहाँ किले हैं
जन-समर्थन इन्हें मिले हैं /
न्यायपालिका भी बेबस है -
कितने ही ख़ट-कर्म हो गए //

संविधान के पाठ ये पढ़ते
संसद की शाला में लड़ते /
न्यायपालिका से ना डरते
औ विधायिका का दम भरते /
जनता की लाचारी है या -
इनके ही सत्कर्म खो गए //

देख रहें हैं टुकुर-टुकुर हम
जाने कब बदलेगा मौसम /
जातिवाद से ऊपर उठकर
नई-नई सोच को गड़कर /
एक नया इतिहास लिखेंगे -
नेता के गुण-धर्म हो नए //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास “ नीरद “

" क्यों दुखी है अन्नदाता "

कृषि उत्पादन बढा है
देश आगे को खड़ा है /
स्थिर हुई है अर्थ-नीति
छाँव की होती प्रतीति /
नेता बांधे सिर पे सेहरे -
नंगे सिर है अन्नदाता //

खाद के हैं दाम ऊँचें
कहाँ पानी फसलें सींचे /
बीज उन्नत हुए मंहगे
वसन फटे बदन नंगे /
मंडियों में पसरी खेती -
बनिया देखो भाव खाता //

कहीं सरकारी खरीदी
जैसे तरकारी खरीदी /
धक्के मजबूरी बने हैं
हाथ में ना खनखने हैं /
कुछ मिलेगा बाद रुपया -
कुछ ही उनके हाथ आता //

ललना के विवाह टलते
बच्चे अमराई में पलते /
सूखा पड़ा भूखे हैं बंदे
कई टंगे फाँसी के फंदे /
ऋण में पैदा -जीते -मरते -
ऋण कभी न उतर पाता //

कृषक भी लिखा-पढ़ा है
इक वर्ग ही आगे बड़ा है /

जितनी ज्यादा है खेती
पायेंगे उतने ही मोती /
लघु-कृषक का है मरण तो -
मेहनत का फल मिल न पाता //

खेती उन्नत है जरूरी
वरना पट पाये न दूरी /
अवसरों को खोजना है
प्रशिक्षण भी थोपना है /
नदी-नालों का संगम -
जलस्तोत्र ही सुख-प्रदाता //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

7

" पुलिस आज संभली संभली है "

जे एन यू में नेतागिरी है
वी-सी पर नजरें ठहरी हैं /
प्राध्यापक हैं छात्र साथ हैं
हुआ गलत पर जुड़े हाथ हैं /
किलाबंदी है युनिवर्सिटी में -
पुलिस ढूंढती आज गली है //

रातों को जुटते प्रांगण में
समर्पण नहीं समर्थन मन में /
सही-गलत का ध्यान नहीं है
वाणी पर लगाम नहीं है /
कैसी सोच देश में पनपी -
दोषी कहते पुलिस छली है //

नहीं सरेंडर आओ अंदर
बदला-बदला सा है मंजर /
सब बैठे हैं नजर गढाये
हरी झंडी अब कौन दिखाए /
मीडिया अंदर पुलिस बाहर है -
देखें पुलिस कितनी बली है //

नेता अपना हित साधे हैं
दोषी उनके ही कांधे हैं /
देशद्रोह अब बना नजरिया
विधि-वेत्ता भी ढूंढे गलियाँ /
अपराधी अपराध से मुकरे -
दोष-सिद्धि को हवा मिली है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

8

" है न्याय व्यवस्था बड़ी लचीली "

अपराधी अब शेर हो रहे
यहाँ-वहां कांटे बो रहे /
राजनीति संरक्षण देती
और गुनाह की खेती होती /
विधि के जानकार बिकते हैं -
करे न्याय से यहाँ ठिठोली //

सिमी से लोग यहाँ जुड़ते हैं
और सेवा-निवृत होते हैं /
कैसी है बेशर्मी हमारी
कैसी देशभक्ति हमारी /
स्वीकारोक्ति – कथन बदलते -
और प्रमाण की लगती बोली //

बिना प्रमाण अपराध न कोई
प्राथमिकी पन्नों में खोई /
छेद व्यवस्था में बहुतेरे
न्याय सत्य-सत्य को टेरे /
जहाँ छांह की आस जगी है -
है वह छतरी बड़ी रंगीली //

विधि में देरी-दूरी भी है
मंहगा भी मजबूरी भी है /
किसके आगे हाथ फैलाएं
न्याय कहाँ मांगनें जाएँ !
ऋण लेकर भी लड़े खूब हैं -
कई पीढियां यहाँ हैं बदली //

तम-प्रकाश में हम जीते हैं
फिर भी सबक नहीं सीखें हैं /
सत्य सदा जीता है फिर भी
झूंठ कभी कम हुआ नहीं जी /
न्यायालय में धवल न्याय है -
प्रांगण में चले चाहे गोली //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

9

" राजनीति अब नीति नहीं है "

भाषा संतुलन नहीं जरूरी
कैसे बढ़े समाज में दूरी !
व्यंग बाण हैं तनी कमान है
आहत करते मन-प्राण हैं /
जहाँ सजगता केवल विरोध है -
मथते जैसे रोज दही हैं //

मीडिया यहाँ हाथ में पाओ
जो चाहो बस वही दिखाओ /

बहस-मुबाहिसे और प्रवक्ता
जनता का रुख कहाँ से मुड़ता !
कहाँ आग हो कहाँ हवा दें
शेष बचा बस काम यही है //

छात्र राजनीति पढ़ते हैं
लक्षहीन दिशा गढ़ते हैं /
यहाँ पार्टियाँ दम भरती हैं
अपने-अपने पात्र घडती है /
पोषण भी संरक्षण भी है -
छोड़ी नहीं कसर कहीं है //

सामाजिक समरसता टूटी
बाबा सब बाटें यहाँ बूटी !
नेता सारे शरण गहे हैं
जन कुपोषित थके हुए हैं /
वोटों पर बस नजर गढ़ी है -
अपने-अपने खाते-बही हैं //

संसद में गतिरोध बनाते
जनता को दमखम दिखलाते /
खर्च करोंड़ो यों फूंके जाते
जनता के हित साध न पाते /
दम तोड़ती है नीति-घोषणा -
अपराधी सब यहीं कहीं हैं //

देश-द्रोह अब बचा कहाँ है
इसे विरोध का स्वर कहा है /
इसीलिये आतंक है पनपा
दबे पाँव यहाँ आ धमका /
धर्म-स्थल सब बने अखाड़े -
धर्म-ध्वजा रुख दिशा नई है //

नैतिक शिक्षा नेता पढ़ लें
जो भूलें हैं फिर से गह लें /
सेना के जवानों पे रीझें
देश-प्रेम का सबक भी सीखें /
पढ़ें गीता कुरान की आयत -
कहाँ गलत हम कहाँ सही हैं //

देश-प्रेम कोई नहीं जाने
सुरा-सुन्दरी और मयखाने /
प्राणोंत्सर्ग की होड़ नहीं है
बन बैठे रणछोड़ सही है /
मतवाले हैं राहगीर बस -
सच खोयी हुई दिशा कहीं है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

10

" यहाँ वहां बस वाद- वाद है "

राजतन्त्र का हुआ सफाया
प्रजातंत्र पर उसका साया /
साम्यवाद में ना सम्मोहन
सभी और प्रजा का दोहन /
नई खोज में नई जुगाड़ में -
पनप रहा फिर वंशवाद है //

राजनीति अब बदली-बदली
दशा देश की अभी न संभली /
सामाजिक विघटन जारी है
अभी गरीबी महामारी है /
समाजवाद के हिलते पाये -

लगा हाथ अवसरवाद है //

रंग-भेद ने रंग है बदला
भूल रहे इतिहास हम पिछला /
जंगल से शहरों में लौटे
बदल गए प्राचीन मुखौटे /
परिवर्तन की आस जगी है -
ख़त्म नहीं अभी नस्लवाद है //

जीवन में संतोष नहीं है
आपा-धापी होश नहीं है /
भूखे पेट निराशा पलती
नीयत में अब खोट मचलती /
हथियार हाथ हैं मारा-मारी -
अब पैर पसारे उग्रवाद है //

धर्म ने फिर करवट बदली है
सीमाएं अपनी गढ़ ली हैं /
कहीं पुरातन कहीं नया है
मानवता का अस्त हुआ है /
पूंजीपति या धर्म-प्रणेता -
सब चाहें विस्तारवाद हैं //

खूब है अर्जन खर्च नहीं कम
आज में जीते कल का ना गम /
संचय की अब कौन सोचता
ऋणों की गठरी सर पर ढोता /
दुनिया ने करवट बदली है -
पनपा अब यहाँ भोगवाद है //

नारी का परिवेश है बदला
खुले केश मन-भेष है बदला /
कांधे से कन्धा टकराकर
गर्वित है ऊँचाई पाकर /
पूरब-पश्चिम एक हो रहे -
नजरिया केवल काम्य्वाद है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

11

" तू जाने या मैं जानूँ "

लोग यहाँ मुझ पर हँसते हैं
अपने ही मुझको ठगते हैं /
किस्मत भी है खेल खेलती
आगे-पीछे मुझे ठेलती /
तू (रब) शरारत से हँसता है -
किसको मैं अपना मानूं //

बचपन को माँ ने दुलराया
जीवन का दर्शन सिखलाया /
पिता ने गीता हाथ थमा दी
अनजाने यों भेंट करा दी /
जब नितान्त एकांत मिले तो -
मैं तुझसे ही मिलना ठानूं //

जो पाया संतोष कर लिया
गरल मिला तो गरल पी लिया /
कभी किसी से रार न ठानी
लोग तंग करते बेमानी /
सूरज जैसा वक्त तप रहा -

छतरी कहाँ जो मैं तानूं //

सूख-दुःख में समभाव रहा हूँ
अपने में निष्पाप रहा हूँ /
भूले-बिसूरे हुई गलतियाँ
जब-तब गिनता रहा मैं कमियां /
जैसा हूँ तेरा अपना हूँ -
हार कभी ना मैं मानूं //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

12
" अभी अभी तो नशा चढ़ा है "

रातें अब रंगीन लगे है
नये नये से ख़्वाब जगे हैं /
बोतल देखो नाच रही है
दुनिया सारी भाग रही है /
साकी भी है मयखाना भी -
अभी-अभी तो जाम भरा है //

दुनिया अब अपने पीछे है
हम तो बस आँखें मींचे है /
देह थकन से देह तपन से
मौका पाया बड़े जतन से /
रोशन तन मन आज हो गया -
अभी-अभी तो घूँट भरा है //

अलग-थलग लगता जग सारा
मैं जीता या सब कुछ हारा /
नियति मेरे हाथ बंधी है
लगता है कोई कमी नहीं है /
सब कुछ आज हाथ में अपने -

अभी-अभी तो स्वाद बढ़ा है //

अपने पल में हुए पराये
साथी आज सभी मन भाये /
चाँद यहाँ तो दाग-दाग है
अपने हिस्से रोज फाग है /
कर्पूरी हो गया है पल-पल -
अभी-अभी तो असर बढ़ा है //

यहाँ डूबना मज़ेदार है
हर पल लगता असरकार है /
जो पाया है उस पर खीजें
जो खोया है उस पर रीझें /
हर-जीत का किसे गम यहाँ -
अभी-अभी तो पेट भरा है //

पाया कम ज्यादा खोया है
आँगन में बबूल बोया है /
काँटों का एहसास नहीं है
खोते जो आभास नहीं है /
पछतावा है बना दिखावा -
अभी-अभी तो नशा बढ़ा है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

13
" तिरंगा भारत का परचम "

शिक्षस्थल हैं बने अखाड़े
राजनीति के पढे पहाढ़े /
देशधर्म को छात्र हैं भूले
हिल गई आज देश की चूलें /

नारों में विद्रोह छुपा है -
हो गई आज हवा गरम //

अपराध को प्रमाण चाहिए
प्रशासन बस इनाम पाइए /
लक्ष्यहीन यहाँ नेता सारे
केवल वोट-वोट उचारें /
एकसूत्र में देश नहीं है -
सभी दिखाते अपना ख़म //

देशप्रेम की लहर नहीं है
फौजी मरते असर नहीं है /
गलत दिशा है गलत संदेशे
नई पीढ़ी को गर्त न भेजें /
गुमराहों को सही दिशा दें -
सख्त सजा पर नहीं हो गम //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

14

" सबके अपने यहाँ राग हैं "

घड़ी में तोला घड़ी में माशा
मनुज स्वभाव एक तमाशा /
मुस्कानें कभी बनी दिखावा
चेहरे पर रहस्य की छाया /
अपनों की पहचान कठिन है -
घर में ही पलते नाग हैं //

छलना ही अब यहाँ बदा है
हंसी लबों ने खूब ठगा है /
रिश्ते-नाते बेमानी हैं
दुनिया फिर भी दीवानी है /

मौसम खिलते रंग बदलते -
दिल अपने कहाँ बाग़-बाग़ हैं //

पाड़-पड़ौसी अपनी मस्ती
राज हैं गहरे बस्ती-बस्ती /
हिला हुआ सामाजिक ढांचा
आज विरासत बनी तमाशा /
मानवता भी मौन खड़ी है -
बदले-बदले से दिमाग हैं //

कहीं दीवाली कहीं दीवाला
माँ के आँचल छुपा है लाला /
गगन चूमती खड़ी ईमारतें
दीन के हिस्से सिर्फ इबारतें /
नेताओं के भाग फिरे हैं -
सबके हिस्से कहाँ फाग है //

मेहनत से तकदीर बदलते
गिरते-पड़ते और संभलते /
सपनों की खेती बोते हैं
रोज उम्मींदे ही ढोते हैं /
आज नहीं कल भी बदलेंगें -
मधुर गीत संग यहाँ जाग है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

15

" खोया हुआ गुमान चाहिए "

उच्च शिखर अभिमान हमारा
हिमगिरी हमको लगता प्यारा /
रक्षक हैं वे नायक कह लो
देशप्रेम में थोडा बह लो /

आज फंसी है नाव भंवर में -
जीवन की मुस्कान चाहिए //

पाक-चीन की नजर है पैनी
जहाँ बर्फ पर चलती छैनी /
खाना-पीना नींद कहाँ है
उठती-गिरती श्वास यहाँ है /
माँ का प्यार होंसला देता -
अपनों का अभिमान चाहिए //

फिल्मी हीरो सदा लुभाते
ऊँचे सपने हाथ न आते /
भाग-दौड़ है राह कठिन है
आज दवा ना दुआ का दिन है /
कह दो अपने भगवानों से -
नायक को वरदान चहिये //

माँओं की पुकार चाहिए
बहनों का वह प्यार चाहिए /
सधवा-विधवा न्नर-नारी सब
अब तक चुप थे जागेंगे कब /
सच्चे मन से करो कामना -
इकलौता अभयदान चहिये //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

16

" दुश्मन सीना तान अड़ा है "

अमेरिका से हुई गवाही
न्याय की देने लगे दुहाई /
बातें नई नहीं है जानी
सम्मुख अपने वही कहानी /
लखवी सईद आईएसआई -
और फरेबी पाक खड़ा है //

फिर छेड़ा राग कश्मीरी
पठानकोट से पाली दूरी /
मन मैला है नये मुखोटे
फन आतंकी खूब समेटे /
है सहयोग महज दिखावा -
कूट-कूट आक्रोश भरा है //

सियाचिन पर नजर गढाए
पाक-चीन मत एक बनाये /
हथियारों का भरा जखीरा
रीता कोष ऋणों का टीरा /
आतंकी हैं खेप नशे की -
सीमा पर तैयार खड़ा है //

हुई हेडली की जब पेशी
नीयते-पाक सभी ने देखी /
अपराधी की कौन सुनेगा
तर्कों पर सिर कौन धुनेगा !
पाक इसे झुठलायेगा फिर -
प्रश्न मुखरित यहाँ बड़ा है //

छब्बीस-ग्यारह कैसे भूलें
उत्सर्गों को आओ टटोलें /
सीमा पर शहादत जारी
हिम-समाधि जाएं वारी /
समाधान सरकार के हाथों -
अभी होंसला यहाँ बड़ा है //

17

" शिक्षा-दीक्षा मनी - मनी है "

अभिभावक की गहन परीक्षा
इंटरव्यू फिर प्रवेश- समीक्षा /
शिक्षा सिमट गयी बस्ते में
कहाँ मिल रही अब सस्ते में /
सरकारी शिक्षा भी केवल -
खाना-पीना खेल बनी है //

शिशुओं के कांधे पर बोझा
रास्ता सुगम नहीं है खोजा /
खाना-पीना खेल हैं भूले
ट्यूशन के पलने में झूले /
वाटर टैंक में डूबते बच्चे -
मात-पिता पर आन बनी है //

शिक्षा उच्च में भारी घपले
प्रतियोगी स्पर्धा ही ठग ले /
जाने कैसे सबक़ सिखाते
आत्महत्या छात्र अपनाते /
लक्ष्य से भटके यहाँ भविष्य हैं -
भाग-दौड़ है तनातंनी है //

शिक्षा का विकास हुआ है
नैतिकता का ह्रास हुआ है /
डिग्री लेकर घूम रहें हैं
सपनों में बस झूम रहें हैं /
अगर निराशा पली-बढ़ी तो -
जीवन से तकरार ठनी है //

मैकाले की नीति पुरानी
अब निश्चय ही बदली जानी/
रोजगार संग कौशल होगा
तकनीकी शिक्षा बल होगा /
बुलंद होंसले दृढ निश्चय से -
अपनी तो पहचान बनी है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" पूज्या पीछे अभी कहीं है "

पुरुष-प्रधान समाज है अपना
समता कभी यहाँ थी सपना /
संघर्ष सदा हिस्से में आये
सेवा के प्रतिमान बनाये /
समर्पिता होकर भी नारी -
केवल दांव लगी यहीं है //

घर-परिवार को पहले देखा
लांघी नहीं लक्षमण रेखा /
सभी क्षेत्र में दखल दिया है
पल-पल को कुर्बान किया है /
अपने खातिर जिया नहीं है -
और पीड़ा खूब सही है //

सबके अपने तर्क यहाँ है
सोच-सोच में फर्क यहाँ है /
धर्माचार्य भी बंटे हुए हैं
कुछ विरोध में डटे हुए हैं /
यहाँ गहराए हैं विवाद भी -
पूजा को प्रवेश नहीं है //

नारी पर अभिमान किया है
नारी को सम्मान दिया है /
कई परम्पराएँ तोड़ी हैं
कहीं कमी नहीं छोड़ी है /
वामांगी का स्थान दिया है -
हमने बाँहें सदा गही हैं //
पूज्या पीछे सदा नहीं है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

19

" हमें नयी पहचान मिली "

सत्तावन से लड़ते आये
आजादी के झंडे फहराये /
जब मुष्टिका हमने तानी
संगठित दिखा हिन्दुस्तानी /
टूटी दासता की बेडी-
स्वतंत्र एक मुस्कान खिली //

प्रजातंत्र जब हाथ लगा
गणतंत्र हमें अनिवार्य लगा /
गढ़ी विकास की परिभाषा
जन-जन में जागी आशा /
शहीदों के जतन से -
है स्वतंत्रता यहाँ पली //

विज्ञानं में तरक्की की
सीमाएं विकास की गढ़ ली /
कृषि विकास आधार बना है
फिर भी कोहरा अभी घना है /
भूख-गरीबी से लड़ना -
दशा अभी नहीं संभली //

सीमाओं पर बनी चौकसी
अंदर भी है अभी बेबसी /
भीतरघात यहाँ जारी है
राजनीति बस लाचारी है /
भारत माँ के माथे पर -

लगे विकास की टिकुली //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

20
''

" तेर बिन पल नहीं जिया जी "

नौ माह तक कोख में पाला
भीतर देती रही निवाला /
नया जन्म दे पीर सही है
दिल से दिल की जुडी कड़ी है /
घुटन भरे भरे जब जब पल आये -
तूने मातु नई हवा दी //

भूख से भी लड़ना सिखलाया
काँटों पर चलना सिखलाया /
रुखी-सुखी चिकनी-चुपड़ी
रांहें कभी थी चिकनी-उघड़ी /
दरवाजे की चौखट खड़े-खड़े -
मुसीबतें सारी लौटा दी //

हाथ पकड़ चलना सीखे हैं
शब्दकोष है ना रीते हैं /
रिश्तों को भी जीना सीखे
फटे जख्म को सीना सीखे /
और जवानी की अंगड़ाई -
ममता के आँचल में जागी //

शिक्षा-दीक्षा रीति-नीति दी
जीवन की कमियां पूरी की /
पिता-गुरु के सबक याद हैं

तेरे एक-एक शब्द याद हैं /
जब भी डगमग पैर हुए तब -
तेरी सीख ने नई दिशा दी //

हमदम की सौगात भी दी है
वंश बढ़ा आशीष मिली है /
जीवन की हर उपलब्धि तो
माँ तुझसे ही हमें मिली हैं /
लक्ष्य भेदना सिखलाकर -
जीवन को एक सही दिशा दी //

मेरा जो सब कुछ तेरा है
मगर उम्र ने अब घेरा है /
देह शिथिल सी लगती है अब
हंसी आँखों में बसती है अब /
यदा-कदा जब आह निकलती -
मुख से तूने सदा दुआ दी //

एक दिन तूने पाठ पढ़ाया
जीवन का दर्शन समझाया /
पीले पात सदा झरते हैं
हम भविष्य से क्यों डरते हैं /
उपलब्धि हो हार गले का -
जीवन एक मनोरम झांकी //

21

" कूड़े के यहाँ ढेर लगे हैं "

बरसों से कूड़े पर बैठे
स्वच्छता कम फिर भी ऐंठे /
दिल दिमाग का मंजन बाकी
एक दूजे से यों इर्ष्या थी /
ताना बना जो समाज का -

कुछ बरसों से गये ठगे हैं /

कूड़ा-करकट आफत लाया
इन्द्रप्रस्थ की शामत लाया /
नेता सब खामोश लगे हैं
सत्ता में मदहोश लगे हैं /
कर्मी सब हड़ताल पे बैठे -
रूठे भाग्य अभी नहीं जगे हैं //

बजट नियंत्रण हाथ से छूटा
नजर लगी तो छींका टूटा /
नहीं कोई दीवार चाहिये
रोटी बस व्यवहार चाहिये /
भूखे पेट बिलखते बच्चे
किस्मत रूठी कहीं रतजगे हैं //

जनता की लाचारी देखो
जो फैली है बीमारी देखो /
आपस में लड़ती सरकारें
कोर्ट-कचहरी की दीवारें /
स्वच्छ प्रशासन देने वाले -
लगते बिलकुल थके थके हैं //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

22

" तेरे बिन पल नहीं जिया जी "

नौ माह तक कोख में पाला
भीतर देती रही निवाला /

नया जन्म दे पीर सही है
दिल से दिल की जुडी कड़ी है /
घुटन भरे भरे जब जब पल आये -
तूने मातु नई हवा दी //

भूख से भी लड़ना सिखलाया
काँटों पर चलना सिखलाया /
रुखी-सुखी चिकनी-चुपड़ी
रांहें कभी थी चिकनी-उघड़ी /
दरवाजे की चौखट खड़े-खड़े -
मुसीबतें सारी लौटा दी //

हाथ पकड़ चलना सीखे हैं
शब्दकोष है ना रीते हैं /
रिश्तों को भी जीना सीखे
फटे जख्म को सीना सीखे /
और जवानी की अंगड़ाई -
ममता के आँचल में जागी //

शिक्षा-दीक्षा रीति-नीति दी
जीवन की कमियां पूरी की /
पिता-गुरु के सबक याद हैं
तेरे एक-एक शब्द याद हैं /
जब भी डगमग पैर हुए तब -
तेरी सीख ने नई दिशा दी //

हमदम की सौगात भी दी है
वंश बढ़ा आशीष मिली है /
जीवन की हर उपलब्धि तो
माँ तुझसे ही हमें मिली हैं /
लक्ष्य भेदना सिखलाकर -
जीवन को एक सही दिशा दी //

मेरा जो सब कुछ तेरा है
मगर उम्र ने अब घेरा है /
देह शिथिल सी लगती है अब
हंसी आँखों में बसती है अब /
यदा-कदा जब आह निकलती -
मुख से तूने सदा दुआ दी //

एक दिन तूने पाठ पढ़ाया
जीवन का दर्शन समझाया /
पीले पात सदा झरते हैं
हम भविष्य से क्यों डरते हैं /
उपलब्धि हो हार गले का -
जीवन एक मनोरम झांकी //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" कूड़े के यहाँ ढेर लगे हैं "

बरसों से कूड़े पर बैठे
स्वछता कम फिर भी ऐंठे /
दिल दिमाग का मंजन बाकी
एक दूजे से यों इर्ष्या थी /
ताना बना जो समाज का -

कुछ बरसों से गये ठगे हैं /

कूड़ा-करकट आफत लाया
इन्द्रप्रस्थ की शामत लाया /
नेता सब खामोश लगे हैं
सत्ता में मदहोश लगे हैं /
कर्मी सब हड़ताल पे बैठे -
रूठे भाग्य अभी नहीं जगे हैं //

बजट नियंत्रण हाथ से छूटा
नजर लगी तो छींका टूटा /
नहीं कोई दीवार चाहिये
रोटी बस व्यवहार चाहिये /
भूखे पेट बिलखते बच्चे
किस्मत रूठी कहीं रतजगे हैं //

जनता की लाचारी देखो
जो फैली है बीमारी देखो /
आपस में लड़ती सरकारें
कोर्ट-कचहरी की दीवारें /
स्वच्छ प्रशासन देने वाले -
लगते बिलकुल थके थके हैं //

" क्या खूब गजब करते हैं "

हाथी के दांत दिखाने के
वादे जो थे बहाने थे /
आतंक जहाँ पलता-बढ़ता
रोज नये मिथक गढ़ता /
निशाचरी माया जिनकी -

ताक़त का दम भरते हैं //

उम्मीदें दम तोड़ रही हैं
आशाएं संग छोड़ रही हैं /
न्याय हो रहा जहाँ विफल
जीत रहा केवल छल-बल /
अजी आदमखोर भेड़िये -
कब सिंहनाद से डरते हैं //

नये प्लान करना होंगें
जो गोपनीय रखना होंगें /
अब एक्शन हुआ जरूरी है
हम भूलें जो मजबूरी है /
जवानों की शहादत पर -
हम सिर्फ नाज करते हैं //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

25

" तुम्हे नमन सौ बार है "

चिंता किसे फिकर है
मस्ती भरी डगर है /
दस्तक देती खुशियाँ
खुशबू की गलबहियां /
सीमा पर चौकस तुम -
हम गाते मल्हार हैं //

काँटों भरी डगर है
चुन ली एक नजर है /
सर पे कफनी बांधे
संगीनें रख ली काँधे /
माँ भारती के लब पे -
तुम्हरी मनुहार है //

लूटा दिलो- जिगर है
सभी कुछ न्योछावर है /
देश सेवा बनी लगन
दूर तक है नहीं थकन /
लहराए माँ का आँचर -
सपने जगे हजार हैं //

यों नाज सभी करते हैं
तुम पर दम भरते हैं /
तुम शान देश की हो
तुम आन देश की हो/
छपन का सीना रखते -
यहाँ हम सर्वहार हैं//

26

" नजरिया एक समान नहीं है "

अपनी पसंद सभी पर थोपें
कभी बबूल आँगन में रोंपे /
ज्ञान अधूरा तर्क खड़ा है
सत्य -झूंठ में फर्क बड़ा है /
भीड़ एकजुट हुई अगर तो -
रास्ते में व्यवधान नहीं है //

पढ़े -लिखे पर चढ़े हैं चश्मे
वही चाहते जो है मन में /
खेमों में हम आज बंटें हैं
जातिवाद के प्रश्न रटे हैं /
हम बदले हैं मन बदला है -
सच्चा अब ईमान नहीं है /

राजनीति में दंश मिले हैं
अपनों ही से यहाँ गिले हैं /
झूंठ - फरेब है घेराबंदी
नीयत सच्ची नहीं है गन्दी /
विघटनकारी सोच रखें यह -
अपनों का अपमान नहीं है //

हंगामे हैं जगह -जगह पर
खुद को देखे एक नजर भर /
असर" ठहरी नजर" करे बस
कहीं" घूमती नजर" नहीं अब /
आँखों पर ऐनक बदली है -
खोया समाधान कहीं है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

27

" हार -जीत का छोर नहीं है "

जन्मघुट्टी में यही मिला है
पुष्प सदा काँटों में खिला है /
संकल्पों का खेल है जीवन
लक्ष्य बिना बेमेल है जीवन /

अँधियारा फिर लौट न पाए -
ऐसी कोई भोर नहीं है //

सूख -दुःख के अनुभव होते हैं
कुछ पाते हैं कुछ खोते हैं /
खुशहाली कभी गम मिलते हैं
आँखों में आंसू पलते हैं /
बुरे वक़्त को बाँध सके जो -
ऐसी कोई डोर नहीं है //

रुखी-सूखी ही मिलती है
पटियों पर रातें कटती हैं /
रुपयों से रूपया टकराए
हम ना संचित धन कर पाए /
पीड़ा ने जिसको न छुआ हो -
ऐसा कोई पोर नहीं है //

मेहनत से सब कुछ पाया है
हार -जीत को अपनाया है /
बड़े चैन से हम सोते हैं
अकसर ख्वाबों को बोते हैं /
अपनी गठरी ले जाये -
ऐसा कोई चोर नहीं है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

28
" इंतजार काटे नहीं कटता "

पल -पल भारी हो जाते हैं
रात -दिवस कहीं खो जाते हैं /
दिल-दिमाग को चैन न होता
मनवा भी बेचैन ही होता /

सुगम राह हो -
राही नहीं थकता //

स्वप्न किराये के आँखों में
महके पल-पल हैं सांसों में /
टिक-टिक-टिक समय करता है
अनहोनी से जग डरता है /
दु:ख-दर्द कभी -
बांटे नहीं बटता //

हाँ वादे रोज किये जाते हैं
उम्मीदों में जिए जाते हैं /
हाथ निराशा जब लगती है
नींदें रातों की उड़ती है /
कभी हंसी से -
दर्द नहीं घटता //

अनजाने ही मिल जाते हैं
दिल कलियों से खिल जाते हैं /
कभी आसमान मुट्ठी में लगता
समय प्यार से हमको ठगता /
किसी के बांधें-
भाग्य नहीं बंधता //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

29
" अपनी- अपनी पोथी अपना- अपना भाष //

कम पढ़े -लिखे गुणी हैं ज्यादा
पढ़े -लिखों ने सब कुछ नापा /
संतों की महिमा है न्यारी

अलख जगाया दुनिया वारी /
जहाँ भूख कम होगी -
ज्यादा है उपवास //

अब बहू-बेटे में प्यार पले है
वृद्धाश्रम खूब फले फूले हैं /
बेटे नहीं बेटियां प्यारी
महके आँगन घर फुलवारी /
है नई चेतना जागी -
परिणामों की आस //

यहाँ राजनीति के दांव नये हैं
कभी जीते कभी छले गए हैं /
शकुनि के पांसे चलते हैं
सत्ताधारी हमें छलते हैं /
अंधियारे जब जब सिमटे -
फैल गया प्रकाश //

सपनों का खेल लगे न्यारा है
हाथ हमारे इकतारा है /
खोना - पाना अब खेल यहाँ
किस्मत ले जाये जाने कहाँ /
पतझड़ जब बीत चले -
तब आयेंगे मधुमास //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

30
" बच्चे हो गये बड़े सयाने "

लाड़-प्यार से पाला-पोसा
देते रहे उन्हें हम बोसा /
नई दिशा दी नई राह दी

कुछ बनने की नई चाह दी /
पलकों में जो अश्क छुपे थे -
ख़ुशी के बन गये आज ठिकाने //

शिक्षा पूरी काम-धाम है
नई दिशा है नये आयाम हैं /
सुंदर कमसिन साथ मिला है
जीवन लगता खिला- खिला है /
ख़्वाब अधूरे पूरे करने -
होठों पर नित नये बहाने //

हम पिछड़े हैं सोच है पिछड़ी
उनकी सोच बड़ी है तगड़ी /
हम भविष्य की सोचा करते
वे कल की परवाह न करते /
आज में डूबे रंग नया है -
आज भला वे किसकी माने //

पहले तो परिवार बड़ा था
सोच का पहिया यहीं अड़ा था //
अब तो दो दो ही सयाने
तीन हुए तो और दीवाने /
हर पल यहाँ ठिठोली करता -
जीवन के बदले पैमाने //

मात -पिता हैं ठगे -ठगे से
भूल हुई कहाँ थके थके से /
समय -चक्र ने दी है थपकी
झप्पी नहीं मिली है झपकी /
झुकने को तैयार न कोई -
ऐसे बदले आज जमाने //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" आकर्षण है या सहज प्यार है /

रिश्तों में यहाँ सेंध लगी है
नहीं भावना प्रेमपगी है /
मोबाइल भी चैटिंग भी है
इन्टरनेट पे सेटिंग भी है /
बदन सुघड़ है पर उघडा है -
फैशन का बस चढ़ा खुमार है //

बच्चे बूढ़े और जवान क्या
स्वाद चढ़ा है हर जुबान क्या !
परिभाषित अब सेक्स हो गया
पहले था जो कहीं खो गया /
दबा -छुपा जो रखा था वह -
अब खुल्लमखुल्ला सेंधमार है //

गहने नहीं देह आकर्षण
नजरें बस तौला करती तन /
भीड़-भाड या निर्जन वन है
यहाँ कांपता अंतर्मन है /
रोज नये रिश्ते गुंथते हैं -
बिना धरातल बिन अधार है //

मनी -मनी अब खेल हुआ है
प्यार गहरा एक कुआं है /
रिश्ते सच रेशम डोरी से
बंधे अगर छूटे जल्दी से /
कुछ पाने की रेस निराली -
यहाँ हर कोई शाही सवार है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

तार- तार रिश्ते सब हैं //

पढ़े- लिखे शिक्षा फैली है
पल- पल में नीयत मैली है /
इंटरनेट मीडिया -माध्यम
संस्कृति आज हो गई बेदम /
विघटन फैला परिवारों में -
ठगे- ठगे लगते अब हैं //

नई सभ्यता का रथ दौड़ा
नैतिक शिक्षा ने दम तोड़ा /
मात -पिता गुरु असहाय हैं
जीवन दर्शन हाय - हाय है /
अर्थतंत्र की दौड़ मेराथन -
पीछे कोई नहीं अब है //

नारी का सम्मान नहीं है
भोग्या है अभिमान कहीं है /
मानव मूल्य गिरे तेजी से
हम भी पिछड़े नहीं किसी से /
आस्था के स्वरूप भी बदले -
ऊपर से हँसता रब है //

धर्म दिखावे में उलझा है
यहाँ बहुत कुछ अनसुलझा है /
आपा -धापी दौड़ -भाग है
किस्मत से बिखरे ख़्वाब है /
भटके हुए पथिक से हम -
रुकना यहाँ कहाँ अब है //
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

33

कहीं राम गुम कहीं छिपा खुदा है //

हम मन्दिर में राम ढूंढते
वे मस्जिद में सजदे करते /
हमने सब धर्मों को छुआ है
उनका केवल धर्म बड़ा है /
सबका मालिक एक यहाँ बस -
राहें सबकी जुदा जुदा है //

संग खाते हैं संग पीते हैं
अपने - अपने घट रीते हैं /
कोई जहर घोलता वाणी
किसी की वाणी नहीं सयानी /
ईद - दीवाली साथ मनाते -
एक दूजे पर रहे फ़िदा हैं //

कट्टरता ने रंग बदला है
फिर भी कोई नहीं संभला है /
भीड़ - भाड है भाषणबाजी
भूल गये हैं काबा - काशी /
भूलों को घर लौटाने को -
हम करते बस आज दुआ हैं //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

34

" हम बदले तस्वीर बदल गई "

प्रायोजित यहाँ सब चलता है
रूपया सबका मन छलता है /
यहाँ मिडिया अटकल मारे
हाय हाय करते जन सारे /
सच पर्दे में अगर छुपा है -
झूठों की तकदीर संवर गई //

सबका अपना ज्ञान -गणित है
मूढों को सब लगे पठित है /
प्रजातंत्र में सत्ताधारी
जाने जनता की लाचारी /
ठगा गया जन -जन जागा तो -
नेताओं की चाल संभल गई //

मंदिर -मस्जिद हमें बांटते
अपनी -अपनी सभी हांकते /
संविधान में गलियारे हैं
जानकारों के पौबारे हैं /
उम्मीदों का वरण किया तो -
छलना बनकर हमको छल गई //

धर्मभीरु को पाठ पढ़ाकर
अपने हित को साध -साध कर /
धर्मग्रन्थ को हम झूंठलाते
मनमानी व्याख्या समझाते /
परिणामों ने घाव दिए जब -
अपनों की जुबाँ फिसल गई //

धर्म बड़ा या देश बड़ा है
सबसे पहला प्रश्न खड़ा है /
संविधान समभाव रखे तो

इक धारा में यदि बहें तो /
अनचाहे -अनजाने डर की -
गुब्बारे सी हवा निकल गई //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

35

" आज साख फिर दांव लगी है "

उम्मीदों का शोर मचा है
लुटे खूब और हमें ठगा है /
एक छलावा प्रजातंत्र भी
भीगीं आँखें यहाँ सभी की /
है आया कोई स्वप्न जगाने
आज नई फिर आस जगी है //

सत्ता को नहीं आज समर्थन
अंदर- बाहर मिले प्रदर्शन /
चर्चा को स-शर्त तैयारी
ब्लेकमेल है मारा-मारी /
जनता ने जब साथ दिया है
आज उसी के साथ ठगी है//

घर में भी कभी ठगे से लगते
अपने ही विध्वंस जो करते /
देश -धर्म में भेद यहाँ है
धुंआ उठता यहाँ -वहां है /

कट्टरता जब रंग जमाये
समझो मन में रार मची है //

रोज पडोसी छल करता है
नये- नये रंग भरता है /
कभी मिले बम की धमकी है
कभी भेजता आतंकी है /
प्यार पगा कोई न्योता है तो
उसमें नीयत साफ नहीं है //

चर्चाओं का दौर विफल है
सत्ता वहां नहीँ सबल है /
मान्य हमारे साक्ष्य नहीं है
इससे बड़ दुर्भाग्य नहीं है /
इधर शहादत फिर पूछेगी
आज हमारी किसे पड़ी है //

आज विश्व फिर चिंता में है
जगह जगह हथियार जमे है /
यहाँ- वहां है तानाशाही
मानवता पर पुती सियाही /
मैत्री के अब भाव नहीं है
आज दुश्मनी थाल सजी है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

छिड़ी प्रभुत्व की यहाँ लड़ाई //

गुरु आज लघुता को पाले
गूगल यहाँ हर ज्ञान खगाले /

मात- पिता के लाल अड़े हैं
पत्नी के अधिकार बड़े हैं /
पाड़- पडौसी सीना ताने
घटी सहनशक्ति की गहराई //

दफ्तर में यहाँ बॉस खड़े हैं
नेताजी संसद में अड़े हैं /
लोकपाल- जन आस लगाये
पक्ष विपक्ष को रास न आये /
पप्पू जब यहाँ मन की ताने
मैय्या करती कान खिचाई //

सुरसा जैसे बदन बढ़ाये
भ्रष्टाचार यहाँ बल खाए /
लूटमार छलबल होता है
दागदार दामन रोता है /
शक्ति प्रदर्शन कमजोरों पे
तनातंनी पिस्टल लहराई //

आतंक खूब फला फूला है
दबा समर्थन इसे मिला है /
हथियारों की होड़ लगी है
पीछे इक अंधियारी गली है //
फूलों जैसे बम सजाकर
मानवता देखो इतराई //

भीड़-भाड़ है रेलम -पेला
धर्म आज बन गया झमेला /
मनमानी है भय फैला है
सेवा का मन मटमैला है /
जबरदस्ती है कहीं जिहाद है
सबके हिस्से चुप्पी आई //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

37

तुम हो हम हैं ये आलम है //

देशगान की यहाँ सजा है
वन्दे मातरम नहीं पचा है /
देश बड़ा या धर्म बड़ा है
संविधान यहाँ मौन खड़ा है /
राजनीति का संरक्षण है
प्रजातंत्र लगता बेदम है //

एक खुमारी एक नशा है
बदला बदला यहाँ समां है /
हुआ संगठित एक सवाल है
इक मशाल है सौ बवाल है /
भय का जब माहोल बने तो
सत्ता का यहाँ घुटता दम है //

भीड़ भाड़ है संकरी गलियाँ
कहीं तंगहाली कहीं रंगरलियाँ /
मौसम भी मदहोशी में है

कहीं नशा ख़ामोशी में है /
इक पुकार है कई सरमाये
मन में उठते कई भरम हैं //

तू झुक जाये हम न झुकेंगे
सीना चौड़ा कर के चलेंगे /
गन्ध बारूदी जिसको भाये
वहीँ पले आतंक के साए /
मानवता जहाँ लगे सिसकने
है कठोरता और अहम है //

धरा कांपती और विखंडन
कैसे बदलेगा सबका मन /
युद्ध छिड़े हैं खून खराबा
कैसी काशी कैसा काबा //
डर जब बैठा हो पैताने
ध्यान धीर ही लगे सुगम है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" यह कैसा हिंदुस्तान है "

हुई सुरक्षा यहाँ खोखली
नेता खाते रहे ढोकली /
मरते यहाँ जवान है
यह कैसा हिंदुस्तान है //

संसद में बस दांवपेंच हैं
मारपटखनी रासखेंच है /
हैं कोरे वादे भाषणबाजी
बहस मुबाहिसे पंडित काजी /

यहाँ मीडिया बने जागरूक
नेताओं में खेंचतान है //
यह कैसा हिंदुस्तान है //
धरती कांपी दिल हिले हैं
आसमान अभी नहीं गिरे है /
चर्चाओं में कहाँ बचा दम
केवल बातों में भरते दम /
आतंकी मुंहबाए खड़े हैं
ढीली हुई कमान है //
यह कैसा हिंदुस्तान है //

कब तक मांएं रोती रहेंगी
बहनें विधवा होती रहेंगी /
आर पार की बात जो करते
कब तक रहें पाक से डर के /
कब तक यह तिलस्म टूटेगा
कैसी झूंठी शान है //
यह कैसा हिंदुस्तान है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

39
" कौन संभाले यह मशाल है "

देखो यह कैसा बवाल है //
धरती रंग दी यहाँ खून से
कैसा मजहबी फितूर है /
पर फैलाये बैठे हैं वे
दिल्ली क्या अब नहीं दूर है /
जन जन के मन उठते अब यही सवाल हैं //

अपने ही यहाँ प्रश्न उठाते
असहिष्णुता उपहास बन गई /
आग लगाते जन धन हानि

आपस में ही रार ठन गई /
देश सजेगा-संवरेगा कौन संभाले यह मशाल है //

माँ के लाल जान पे खेले
कर्ज दूध का निभा गये हैं /
राजनीति अब धर्म है भूली
हम संप्रदायों में समा गये हैं /
धरती माँ हो गई रुआंसी उन्नत कहाँ रहा भाल है //

शिशु शैशव सुहाग बहनों का
सभी दांव पर यहाँ लगे हैं /
आतंक कर रहा नर्तन नंगा
सब अपनों से यहाँ ठगे हैं /
नई रौशनी की चाहत में सजा हुआ इक नया थाल है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

क्या कहा
दिन आ गये अच्छे //

है सच टूटा फूटा सा यों घर मेरा
और उस पर छत ठिठुरती है /
श्रम करता हूँ दिन भर यूँ मजे से बस
जालिम धुप नश्तर चुभोती है /
थकन की मार से लूँ अंगड़ाई कैसे
पैताने बैठे हुए बच्चे //

वो घरवाली जब मेरी कामपर निकले
तन्हाई में अक्सर ही बिदकती है /

जमाने की हुई आँखें नशीली इस कदर
ह्या बेबस सी पर्दे में सिसकती है /
देह का तपना लड़ाई भूख से धोखा भरम
कहाँ अब लोग सच्चे //

इन दिनों बच्चे भी मेरे हैं खोये खोये से
सपनों का कोई बाजीगर है आया /
आने वाले कल को किसने है भला देखा
आज को उसने है मुठ्ठी में दबाया /
खुशियों की लहर आएगी अपने हिस्से भी
आज तो खाना है धक्के //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

41
''

बदली फिजाएं रंग बदला।
गुलशन में फिर गुल खिला।

ख़्वाब मैनें थे बुने कभी टूटे मगर
अश्कों का खारा समंदर पी गया /
दूसरों के अश्क की जानी खबर तो
जिंदगी को जैसे एक पल में जी गया /
बदली हवाएं रुख बदला दिल खिला //

तंग गलियों से देखा आसमां फैला
फैले हुए विस्तार से मन हिल गया /
उड़ान भरते पक्षियों को देख सच में
उम्मींदों को जागने का उपहार मिल गया /
रंग बिखरे पल निखरे मौसम खिला //

अधजली वे रोटियां चटपटी चटनी
सीलनभरे वे कमरे सब कुछ धुंआ धुंआ /
खुशबू से दूर तक मेरा वास्ता नहीं था
किस्मत ने जाने कब यों माँ जैसा छुआ /
साथ पाया प्यार पाया जीवन खिला //

रचियता " नीरद " भगवती प्रसाद व्यास -:

42

जीवन जटिल है /

धूप है पसीना है
मर मर कर जीना है /
वो परिधानों में
हमें फटे हुए सीना है /
वहाँ गीत है संगीत है
सजी हुई महफ़िल है /
यहाँ कण्टकीय पथ है
जीवन जटिल है //

लक्ष्य हैं इरादे हैं
स्वप्नों के शहजादे हैं /
उनकी मुट्ठी में आसमां
हम खुद को बहलाते हैं /
वहाँ खुशियां हैं जीत है
रहते संगदिल हैं /
यहाँ आँसूं और मुस्कानें
जीवन जटिल है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

43

बदलती तस्वीर है
नया विहान चाहिये /

मुस्कराता हुआ
हिंदुस्तान चाहिये //
बढ़ते हुए कदम
बढ़ी दिलों की दूरियां /
बैन अब मीठे नहीं
ज्यों चलती है छूरियां /
मेल हो मन में नहीं
करीब लाये सबको जो
वो विधान चाहिये //

गंदली है राजनीति
पैदा करती है भरम /
फितरत है सियासत में
ठगे ठगे से हैं हम /
भारतमां आहत है
संकट है अपनों से
समाधान चाहिये //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

राजनीति बदली है ना बदले हम //

कथनी और करनीं में अंतर
उद्बोधन सम्बोधन है मंतर /
कँही कँही जुमलों की भाषा -
कँही बोलियाँ बनी हैं बम //

जहर बुझे हैं हंसी ठहाके
किसको बेहतर कम हम आंके /
नेता सब अवसर तलाशते -
सच कैसा यह जन गण मन //

उम्मींदो की फेहरिश्त है
मिलती हमको किश्त किश्त है /
जनता के हिस्से में सचमुच -
थोड़ी खुशियां ज्यादा गम //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

पैर पैसारे बैठा
यहाँ बुखार है !
दिल्ली निढाल है !!

कहीं वाइरस डेंगू के
कहीं चिकनगुनिया जकड़े !
और मलेरिया पीछे ना है
झटके मिले हैं तगड़े !
अस्पतालों में जगह नहीं है -
उठते कई सवाल हैं !!

प्रश्न अनुत्तरित जनता के
अब चैनल बहस कराये !
दिल्ली की सरकार यहाँ
है केंद्र के दोष गिनाये !
दो पाटों के बीच में फंस गई -
इंद्रप्रस्थ बेहाल है !!

हरियाली पंजाब की है
गोआ में आकर्षण !
निज का स्वास्थ सुधारेंगे
चलो बेंगळुरू दर्शन !
चुना आपने " आप " को -
आप यहाँ बदहाल हैं !!

मीडिया पर बरसते मंत्री
मोबाईल भी फेंके !
अस्पताल में जाकर झांकें
जनता के दुःख देखें !
धन्य हो गये "आप"को पाकर -
सचमुच हुए निहाल हैं !!

एमसीडी ना सावधान थी
ना ही टोपी वाले !
वोट खींचने की खातिर
झाड़ू हाथ संभाले !
आंसू सूख रहें हैं अब तो -
जीना हुआ मुहाल है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

होश नहीं खोया है
जोश नहीं खोया है !
घात लगा दुश्मन को
घर में जा धोया है !!

धोखे खूब मिले हैं
दरियादिल जो ठहरे !
ताक़तवर समझा है
सख्त नहीं हैं पहरे !
मुस्कानें बांटी हैं -

दर्द बहुत ढोया है !!

सेना पर हमले हैं
फौजी के काटे सर !
आतंकी पाले हैं
मैत्री की दस्तक पर !
प्यार नहीं पल सकता -
नफरत को बोया है !!

किये विदेशी दौरे
लोगों को समझाया !
सबको लील है लेगा
यह आतंकी साया !
अब नाकेबंदी ऐसी -
हंस हंस कर रोया है !!

गर सर्जिकल स्वीकारे
खुल जाती है पोल !
बदला हम ले लेंगें
बजा रहे हैं ढ़ोल !
पल पल रहना है सतर्क -
अब देश नहीं सोया है !!

काश्मीर के नाम यह
जंग ख़तम ना होगी !
पाकिस्तान रहा ज़िंदा
झड़पें रोज़ ही होंगी !

फिर अखंड भारत हो -
यही स्वप्न संजोया है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "
ज्वच वथ्वितउ

ज्वच वथ्वितउ

47

" हालात नहीं बदले हैं "

सीमा पर वही तनातनी
संकट के बादल गहरे !
छद्मयुद्ध दुश्मन करता
कितने बैठायें पहरे !
आतंकी सदमे में थोड़े -
लेकिन सम्भले सम्भले हैं !!

भारत विरोध के नारे हैं
बदले की आवाजें उठती !
काश्मीर दुखती रग जानो
हैं साँसे वहां अटकती !
सेना सत्ता आतंकी के -
ख़्वाब वही रुपहले हैं !!

भीतरघात यहाँ होनी है
खार खाये बैठा दुश्मन !
यहाँ वहाँ मोर्चे साधे हैं
फैलाये बैठा है फन !
विषदंत तोड़ने को आतुर -
करना हमको हमले हैं !!

धुंध धुंआ है गोलीबारी
हाथों में हैं हथगोले !
कितना कब तक धीर धरे
अब दिमाग में हैं शोले !
तुम्हे जीत का छोर मिले ना -
फिर नहले पर दहले हैं !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

48

" खून नहीं है जहर भरा है
कब तक माफ करोगे !! "

खुले आम मुंह पर दें गाली
हम बिठलाते पलकों पर !
यह कैसे अभिनेता नेता हैं
जो मिलाते सुर में सुर !
हम बुजदिल हैं या कायर -
कब इंसाफ़ करोगे !!

सेना का बलिदान व्यर्थ है
यदि हमने सोच न बदली !
क्या इतिहास माफ़ करेगा
जब उठी शौर्य पर उंगली !
भारतमाता हंसती होगी -
कब मन साफ करोगे !!

देशभक्ति अब शेष नहीं है
हम राष्ट्रधर्म को भूले !
सत्ता कुर्सी राजनीति ने
है यहाँ हिला दी चूलें !
नहीं एकजुट ही सकते हैं -
जब टूट रहे भरोसे !!

अभी संगठित सेना है बस
उसका मान ना तोड़ो !
देशभक्ति है सच्ची सेवा
वह गुमान मत तोड़ो !
उनकी जैसी जगे भावना -
कब यह ध्यान धरोगे !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" मौसम धुंआ धुंआ है "

अलसाया सूरज
छन छन आती धूप !
फोग नहीं स्मोग़
प्रदूषण बड़ा कुरूप !
हवा हुई विषैली -
मौसम कहीं गुमा है !!

वर्जिश भूल गये
भूले सुबह की सैर !
श्वासें कैद हुई
घर में बैठे कैद !
सरकारें सांसत में -
तंत्र फेल हुआ है !!

स्कूलों पर ताले
मास्क नाक चढ़ी है !
अघोषित इमरजेंसी
सेहत मार बड़ी है !
परेशान हैं सारे -

नियमन शुरू हुआ है !!

हरियाली गुमसुम
हैं कूड़े के पहाड़ !
न्यायालय जागा बस
नेता ले रहे आड़ !
जनता भी हैराँ हैं -
दम घुटता यहाँ वहां है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

50

" कोई उदास है "

कोई खुश कोई उदास है !
मद्धम मद्धम सा प्रकाश है !!

उहापोह है
कहीं हड़बड़ी !
कहीं चैन है
कहीं गड़बड़ी !
जिनके सिरहाने -
सपने थे
सचमुच खुश वे आज हैं !!

खूब करी थी
खेंचा खाँची !
भरी तिजोरी
कहाँ गई जी !
पॉवर गेम -

मनी मनी था
उनके हाथ न रास है !!

नहीं तस्करी
नोटों की अब !
हुए हवाले
जैसे अब ढब !
हाथों में -
पत्थर देते थे
उन पर गिरी ये गाज है !!

नेताओं में
उथल पुथल है !
नोटों का
फैला जंगल है !
सात पीढियां -
तार गये जो
अब चुनाव हुए ख़ास है !!

कांक्रीट के
जाल बिछाये !
हलधर को थे
नोट लुटाये !
तहखानों में-
बसा रमा को
वे रमते आज उदास हैं !!

मुश्किल आज
कुछ परेशान हैं !
जीवन कल
फिर आसान है !
नयी आस है -

नयी गमक है
खुशियों का एहसास है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

51

" परेशान हैं सब "

मुद्रा चलन से बाहर
परेशान हैं सब !!

लंबी लगी कतारें
महिला बुजुर्ग जवान !
कोष बैंक के खाली
सांसत में है जान !
क्रयशक्ति कमजोर हुई -
खाली जेबें अब !!

एक्सचेंज नोटों का
धीमी है रफ्तार !
बड़े नोट पाये हैं
छुट्टों की दरकार !
बाज़ारों की रौनक गायब -
खाली खाली सब !!

बड़े नोट कूड़े में
कहीं दिखा दी आग !
बेहिसाब दौलत के
बदले बदले भाग !

पल में वक़्त है बदला -
खेल हुआ गज़ब !!

गंगा जी में कूड़ा
हैं तैर रहे अब नोट !
परेशान वे होंगे
जिनके दिल में खोट !
काले धन वाले फिराक़ में -
दूजा मौक़ा कब !!

नई नीति सरकारी
अब पाबन्दी लाई है !
उजला होगा सब कुछ
ये उम्मीदें छाई हैं !
है धैर्य की यहाँ परीक्षा -
जाना है सबब !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" देश लगा कतार "

भूखे हैं प्यासे हैं
थोड़े बहुत उदासे हैं !
लूट रहे थे अब तक -
उनके घर पर डाके हैं !
खुशियों की झलक दिखी है -
बाकी सब उधार !!

आधे एटीएम् बंद हैं
बाकी पर भी मचा द्वन्द है !
बैंक अभी सक्षम ना लगते -
लगे हुए प्रतिबन्ध हैं !
सुबह दोपहरी सांझ रात को -
अभी न पाया पार !!

हस्पताल में हैं दुखी
साँसें भी उखड़ी उखड़ी !
अब भी सबको नकद चाहिए -
माथे पर बांधें हैं पगड़ी !
नीति बदली नीयत ना है -
कौन करे उपकार !!

दूध मिले ना सब्ज़ी भाजी
सब छुट्टे चाहे हाँ जी !
शादी ब्याह व्यवस्था बिगड़ी -
चेक कार्ड अभी चलते ना जी !
आटा चांवल दाल मिले ना -
फाके करते यार !!

बाज़ारों में है मंदी
ऊपर से नाकेबंदी !
यहाँ वहां छापे डाले हैं -
राजनेता भी प्रतिद्वंदी !
जनता खुश हैं छोटे दुःख हैं -
कल का है सत्कार !!

पांच दिवस बीते लंबे
अनुशासित ठन्डे ठन्डे !
निर्णय से संतोष सभी को -
बांधे तावीज़ और गंडे !
धन काला है रातें काली -
सच्चा हो व्यवहार !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" खूब रही है "

नोटबन्दी से घेराबंदी
खूब रही है !!

एक तरफ से सबको घेरा !
हदबंदी का पिटा ढिढोंरा !
बड़े नोट बेकार हुए सब
आज अमीरी गज़ब ढही है !!

यों नेताओं की भद पिट गयी !
उन नोटों की मीनारें ढह गयी !
कैसे वोट खरीदेंगे अब
पड़ी वक़्त की मार सही है !!

अलगाववाद को सांप सूंघ गए !
उनके जो थे आँख मूँद गए !
कहाँ हवाले कहाँ ऐश अब
यों ही मथते आज दही हैं !!

कामकाज ठप दो नंबर का !
धड़ाम गिरे जिनका अम्बर था !
आमद शुद्ध टेक्स भरो अब
सब जन बोले यही सही है !!

काला धन अब धुंआ धुंआ है !
सब भ्रष्टाचारी रंवां तंवां हैं !
लूट नहीं सहयोग करो अब
जनता ने भी चहा यही है !!

सब कतार में अनुशासित हैं !
खूब लुटे हैं सच शापित हैं !
कल सुनहरा सम्मुख है अब
इसीलिए नयी राह गही है !!

है राजनीति अब नई नीति पर !
है विरोध यहाँ सार्वानहित पर !
भला बुरा सब जाने हैं अब
नीयत विपक्ष की ग़लत रही है !!

सांसदों के है बोल गिर गये !
और प्रदर्शन में वे घिर गये !
कौन हितैषी जान गये सब
गुन लो मन की बात कही है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" आरक्षण अब बना चुनौती खैर नहीं है /"

शक्ति -प्रदर्शन भीड़-भाड़ है
कुछ पाने का चढ़ा खुमार है /
टुकड़े-टुकड़े गगन हो रहा
चाह बन गयी अधिकार है /
आज सुनाई कुछ न देता -
बस पाना है टेर यही है //

यों घुटने टेक रही वार्ताएं
सबके माथे बढ़ी चिंताएं /
कर्तव्य किसी को नहीं सूझता
अपना हक अपनी गाथाएँ /
जिन्हें दे रहे आज चुनौती -
अपने हैं वे ग़ैर नहीं हैं //

गगन चूमने चला धुआं है
फूलों में अब महक कहाँ हैं /
मन में आग लगाई ऐसी -
समाधान भी कहीं गुमा है /
प्रश्न अनुत्तरित अगर हो चले -
लगती देर -सबेर कहीं है //

आरक्षण की चाह सभी को
सूझे ना अब राह किसी को /
यहाँ भरे पेट भी पेट कूटते
ना भूखे की परवाह किसी को /
सरकारें अब संशय में हैं -
लगता उलट-फेर यहीं है //

संविधान अब खेल लगे है
प्रजातंत्र अब फेल लगे है /
संविधान की आड़ में नेता -
हम सब लगते ठगे-ठगे हैं /
आरक्षण थमना है जरूरी -
अभी हुई कुछ देर नहीं है //

भ वक्त दे रहा दस्तक ....."

युग देखे घड़ियाँ देखी
हालात बदलता है !
झोली खाली हंसकर हमको
हर कोई छलता है !

किसको हम जानें अपना
हर कोई बेगाना है !
तस्वीरों पर हँसता जो
सचमुच वह दीवाना है !
उन सम्बन्धों की खातिर कोई -
बेमौसम रंग बदलता है !!

फूल खिला करते गुलशन में
रंगत खुशबू रसभीनी है !
मंदिर जूड़ा डाली माली
किस्मत अपनी अपनी है !
वक्त दे रहा दस्तक वह -
आहट हर कोई सुनता है !!

जो सचेत कर रहा जागो
वह चौकीदार नहीं है !
जो मुस्काने तुमने बांटी
वह कोई उपकार नहीं है !
सच प्यार की गहराई जानोगे -
वह विरोध में पलता है !!

दोराहे पर आन मिले हो
कुछ पल संग निभाना है !
जलजात कीच में खिलता
यह सोचा सदा ही माना है !
देखो सच्चाई जिसको मन भाती -
वह काँटों पर चलता है !!

यह सफर सुहाना कट जाये
सपन सजीले बने रंगीले !
भौतिकता से क्या लेना है
वह भले रेत के टीले !
उन जीवित अरमानों की कोई -
अनजाने बातें करता है !!